ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

बड़े भाई साहब

कक्षा-दसवी

विषय-हिन्दी

पाठ -१

पाठ का नाम –बड़े भाई साहब

PPT-3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

बड़े भाई साहब पाठ की व्याख्या

- कंकरियाँ - पत्थर के छोटे टुकड़े
  रूद्र रूप - भयानक या घुसे वाला रूप
  प्राण सूख जाना - बुरी तरह डर जाना
- लेखक कहता है कि पढ़ाई में उसका मन बिलकुल भी नहीं लगता था। अगर एक घंटे भी किताब ले कर बैठना पड़ता तो यह उसके लिए किसी पहाड़ को चढ़ने जितना ही मुश्किल काम था। जैसे ही उसे ज़रा सा मौका मिलता वह खेलने के लिए मैदान में पहुँच जाता था। कभी वहाँ पत्थरों के छोटे- छोटे टुकड़ों को उछालता ,कभी कागज़ की तितलियाँ बना कर उड़ाता और अगर कोई मित्र या साथी साथ में खेलने के लिए मिल जाये तो बात ही कुछ और होती। साथी के साथ मिल कर कभी चारदीवारी पर चढ़ कर कूदते, कभी फाटक पर चढ़ कर उसे आगे पीछे करके मोटरकार का आनंद लेते । लेकिन जैसे ही खेल ख़त्म कर कमरे में आता तो भाई साहब का वो गुस्से वाला रूप देखा कर उसे बहुत डर लगता था।
- उनका पहला सवाल यह होता -'कहाँ थे'? हमेशा यही सवाल ,इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों नहीं निकलती कि जरा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे मेरा अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए उसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष के मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- मौन - चुप
  स्नेह - प्रेम
  रोष - गुस्सा
  सत्कार – स्वागत
  अपराध - गलती

- लेखक कहता है कि जब भी वह खेल कर आता तो भाई साहब हमेशा एक ही सवाल,एक ही अंदाज से पूछते थे - 'कहाँ थे '?और इसके जवाब में वह हमेशा चुप रह जाता था। पता नहीं क्यों वह कभी भाई साहब को ये जवाब नहीं दे पता था कि वह जरा बाहर खेल रहा था।उसके चुप रहने से भाई साहब समझ जाते थे कि वह अपनी गलती मानता है और भाई साहब लेखक से प्यार करते थे इसलिए थोड़ा गुस्सा और प्यार के मिले जुले शब्दों में उसका स्वागत करते थे।

- "इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो ज़िंदगी भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आएगा। अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले, नहीं ऐरा - गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात - दिन आँखें फोड़नी पड़ती है और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े -बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो, कि मुझे देख कर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है।

- शब्दार्थ

- हर्फ़ - अक्षर
  ऐरा - गैरा नत्थू -खैरा - बेकार आदमी
  खून जलाना - कड़ी मेहनत करना
  घोंघा - आलसी जीव
  सबक - सीखना
  कसूर - गलती

- (यहाँ लेखक भाई साहब के द्वारा उसे कैसे समझाया जाता था इसका वर्णन कर रहा है)

- लेखक कहता है कि बड़े भाई साहब हमेशा कहते थे कि " अगर वह इसी तरह अंग्रेजी पढ़ेगा तो अपनी पूरी ज़िंदगी में उसे एक भी अक्षर नहीं आएगा । अंग्रेजी पढ़ना कोई आसान काम नहीं है कि जो भी चाहे पढ़ सकता है, अगर ऐसा होता तो बेकार आदमी आज अंग्रेजी का विद्वान होता। अंग्रेजी सीखना के लिए रात दिन किताबें पढ़नी पड़ती है और दिन रात मेहनत करनी पड़ती है, तब जाकर कही अंग्रेजी आती है। आती क्या है, हाँ कहने को आ जाता है कि हमें अंग्रेज़ी आती है। बड़े बड़े विद्वान भी सही अंग्रेजी नहीं लिख पाते बोलना तो दूर की बात है। और बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँटते हुए कहते हैं कि लेखक इतना सुस्त है कि बड़े भाई को देख कर कुछ नहीं सीखता । बड़ा भाई कितनी मेहनत करता है ये तो लेखक अपनी आँखों से देखता ही है लेकिन अगर नहीं देखता तो ये लेखक की आँखों और बुद्धि की गलती है।

- इतने मेले -तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है ? रोज ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं भटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक - एक दरजे में दो -दो तीन - तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल कूद में वक्त गवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे? अगर तुमने इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपयों को क्यों ख़राब करते हो।
- दरजा - कक्षा
  गाढ़ी कमाई - मेहनत की कमाई
- (बड़ा भाई किस तरह अपनी इच्छाओं को दबाता है यहाँ इसका वर्णन है)
- बड़े भाई साहब छोटे भाई को कहते हैं कि इतने सारे मेले - तमाशे होते है,क्या उसने कभी भाई को उनमें जाते देखा है ? हर रोज़ कितने ही क्रिकेट और हॉकी के मैच होते हैं।बड़े भाई साहब कभी उनके आस पास भी नहीं भटकते। हमेशा ही पढ़ते रहते हैं। इतना सब कुछ करने के बाद भी बड़े भाई साहब को एक ही कक्षा में दो या तीन साल लग जाते हैं,फिर भी लेखक ऐसा कैसे सोचे सकता है कि वह इस तरह खेल कूद कर या वक्त गवाकर भी पास हो जायेगा ? बड़े भाई साहब को तो एक कक्षा में दो या तीन ही साल लगते हैं,अगर लेखक इसी तरह समय बर्बाद करता रहा तो अपनी पूरी जिंदगी एक ही कक्षा में लगा देगा । अगर लेखक अपनी उम्र इसी तरह गवाना चाहता है तो उसे घर चले जाना चाहिए और वहां मजे से गुल्ली - डंडा खेलना चाहिए। कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो ख़राब नहीं होगी।
- मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे ? भाई साहब उपदेश की कला में निपुर्ण थे। ऐसी - ऐसी लगती बाते कहते, ऐसे - ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़ कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में ना पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता -"क्यों ना घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमे हाथ डाल कर क्यों अपनी जिंदगी ख़राब करूँ।"
- शब्दार्थ
- लताड़ - डाँट फटकार
  निपुर्ण - बहुत अच्छे
  सूक्ति-बाण - व्यंग्यात्मक कथन, चुभती बातें
  जिगर -हृदय,दिल
  निराशा - दुःख
  बूते - बस
- (लेखक बड़े भाई की डाँट का अपने ऊपर होने वाले असर का वर्णन कर रहा है)

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- भाई साहब की डाँट - फटकार सुनकर लेखक की आँखों से आँसू बहने लगते। लेखक के पास उनकी बातों का कोई जवाब ही नहीं होता था। गलती तो लेखक ने की थी, परन्तु डाँट -फटकार सुनना किसे पसंद होता है? भाई साहब उपदेश बहुत अच्छा देते थे। ऐसी -ऐसी बाते करते थे जो सीधे दिल में लगती थी, ऐसी-ऐसी चुभती बाते करते कि लेखक के दिल के टुकड़े - टुकड़े हो जाते, और लेखक की बाते सुनने की हिम्मत टूट जाती। भाई साहब की तरह कड़ी मेहनत वह नहीं कर सकता था और दुखी होकर कुछ देर के लिए वह सोचने लगता कि "क्यों ना वह घर ही चला जाए। जो काम उसके बस से बाहर है वह वो काम करके अपनी जिंदगी और समय क्यों बर्बाद करे। "

- मुझे अपना मुर्ख रहना मंज़ूर था,लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था। लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम टेबल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए बिना कोई स्कीम तैयार किये काम कैसे शुरू करूँ। टाइम टेबिल में खेल - कूद की मद बिलकुल उड़ जाती।

- मंज़ूर - स्वीकार
  टाइम टेबल - समय सारणी
  स्कीम - योजना

- लेखक कहता है कि उसे अपने आप को मुर्ख कहना स्वीकार था ,लेकिन भाई साहब के बराबर मेहनत करने की सोचने पर भी उसे चक्कर आ जाता था। लेकिन भाई साहब की डाँट - फटकार का असर एक दो घंटे तक ही रहता था और वह इरादा कर लेता था कि आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा। यही सोच कर जल्दी जल्दी एक समय सारणी बना देता। समय सारणी बनाने से पहले वह न तो कोई नक्शा तैयार करता था और न ही कोई योजना बनाता था कि किस तरह से काम शुरू किया जाये। समय सारणी में खेल कूद के लिए कोई समय ही नहीं दिया जाता था।

- प्रातः काल छः बजे उठना, मुँह हाथ धो ,नाश्ता कर ,पढ़ने बैठ जाना। छः से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापिस होकर आधा घंटा आराम, चार से पांच तक भूगोल, पांच से छः तक ग्रामर, आधा घंटा हॉस्टल के सामने ही टहलना,साढ़े छः से सात तक अंग्रेजी कम्पोज़िशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम।

- प्रातः काल - सुबह का समय
  टहलना - घूमना

- (यहाँ पर लेखक की समय सारणी का वर्णन किया गया है)

- सुबह छः बजे उठना,फिर मुँह हाथ धो कर नाश्ता करके सीधे पढ़ने बैठ जाना। छः से आठ बजे तक अंग्रेजी पढ़ने का समय रखा गया, आठ से नौ बजे का समय गणित के लिए ,नौ से साढ़े नौ का समय इतिहास के लिए रखा गया, फिर भोजन करने के बाद स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापिस आकर सिर्फ आधा घंटा आराम के लिए रखा गया,

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- चार से पांच बजे का समय भूगोल के लिए निर्धारित किया गया, पांच से छः बजे का समय ग्रामर, उसके बाद आधा घंटा केवल हॉस्टल के बाहर ही घूमने के लिए रखा गया, साढ़े छः से सात बजे तक अंग्रेजी कंपोजिशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह बजे का समय अलग अलग विषयों के लिए रख दिया गया और अंत में आराम।
- लेकिन टाइम टेबिल बना लेना अलग बात है ,उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके हलके झोंके, फुटबाल की वह उछल कूद, कबड्डी के वह दाँव घात, वॉलीबाल की वह तेज़ी और फुरति, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहां जा कर मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद ना रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता।
- शब्दार्थ

- अमल करना - पालन करना
  अवहेलना - तिरस्कार
  अज्ञात - जिसे जानते न हो
  अनिवार्य - जरुरी
  जानलेवा - जान के लिए खतरा
  नसीहत - सलाह
  फ़जीहत - अपमान
- (यहाँ लेखक टाइम टेबिल का पालन क्यों नहीं कर पाया इसका वर्णन है)
- लेखक ने टाइम टेबिल तो बना दिया था परन्तु समय सारणी बनाना अलग बात होती है और उसका पालन करना अलग बात होती है। लेखक कहता है कि पहले दिन भी समय सारणी का पालन करने में उसे कठिनाई का अनुभव महसूस होता और पहले दिन से ही टाइम टेबिल को नजरदाज करने लगता। मैदान की वह सुख देने वाली हरियाली, धीरे - धीरे चलने वाली हवा के वो हल्के हल्के झोंके ,फुटबाल की वह उछल कूद ,कबड्डी का वह खेल और दाव घात, वालीबाल की वह तेज़ी और फुरती ये सब ऐसी चीज़े थी जो उसे न जाने किसी कारण से ऐसे बाहर मैदान में खींच ले जाते जैसे कोई बहुत जरुरी काम हो और वहां जा कर वह सब कुछ भूल जाता। वो उसकी जान के लिए खतरा समय सारणी, वह दिन रात पुस्तकों में आँखे लगा कर बैठना उसे किसी बात का ध्यान नहीं रहता और वह सब कुछ भूल जाता। इस पर भाई साहब को उसे सलाह देने का अवसर मिल जाता और साथ ही वह उसका अपमान करना भी नहीं भूलते।
- लेखक भाई साहब की डाँट को गलत समझ लेता है और सोचता है कि वे सिर्फ उसे सलाह दे रहे हैं और उसका अपमान कर रहे हैं)
- मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता ,कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सर पर एक नंगी तलवार - सी लटकती मालूम होती। फिर भी मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद का तिरस्कार न कर सकता था।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबधित प्रश्न

- लेखक का पढ़ाई में क्यों मन नहीं लगता था ?
- भाई साहब का किस रूप के बारें में लेखक कहते हैं ?
- भाईसाहब क्रिकेट क्यों नहीं खेलते थे ?
- समय बर्बाद कौन करता था ?
- लेखक येसा क्यों कहता है कि उसे अपने आप को मुर्ख कहना स्वीकार था ?
- समय सारणी बनाने का उद्देश्य क्या था ?
- लेखक भाई साहब की डाँट को गलत क्यों समझ लेता है ?
- भाई साहब हमेशा कौनसा सवाल पूछते थे ?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP

Changing your Tomorrow